आर्योदया

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye No. 303 ARYA SABHA MAURITIUS *1st Mar. to 8th Mar. 2015*

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।

Om ! Agné naya supathā rāyé asmān vishwāni déva vayunani vidwān.
Yuyodhya-smaj-juhurāna méno bhuyishthām té nama uktim vidhéma.

Yajur Veda 40/16
& Ishopanishad

Glossaire / Shabdartha

Agné / Agni -- Dans le contexte de ce verset du Yajur Veda 'Agni' ne veut pas dire le feu mais quelques attributs suivants de Dieu :

(i) Il est la Source de toute lumière qui éclaire l'univers.
(ii) Il est Omniscient, c'est à dire, le détenteur de toute la connaissance ou tout le savoir qu'il transmet à l'homme en lui accordant aussi le pouvoir de distinguer entre le bien et le mal/le pouvoir de discernement.
(iii) Il est Le Guide de tout le monde dans le droit chemin de la vie, vers le bonheur et la prospérité.
(iv) Il est Notre Seigneur Unique, voire le Maître Suprême de l'univers en qui tout le monde doit avoir une foi inébranlable, car c'est lui qui nous protège en nous donnant le courage moral, l'énergie et la force physique pour affronter et combattre le mal avec succès.

Déva – Dieu, Notre Seigneur, qui nous mène dans le bon chemin.
Vishwani Vayunani Vidwān – Dieu Notre Seigneur qui est au courant de tous nos actes et de tous nos agissements.
Rāyé – Pour atteindre le bonheur suprême (Moksha)
Asmān – à nous tous
Supathā – par le bon chemin / la bonne voie
Naya – Mène moi / Mène-nous
Yuyodhi – éloigne
Asmat – de nous
Juhurānam enah – tous nos mauvais penchants, attitudes condamnables / répréhensibles
Bhuyishthām – pour toujours / éternellement
Té namah ouktim vidhema – Nous te saluons très bas.
Nous en sommes très reconnaissant envers toi.

N. Ghoorah

cont. on pg 3

बोध प्राप्ति के पश्चात्

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

मुलशंकर को १८३७ में जब वह १३ साल का बालक था तो शिव मंदिर में तीसरे पहर की पूजा के दौरान बोध प्राप्त हुआ। क्या १३ वर्ष की अवस्था में किसी बालक को बोध की प्राप्ति हो सकती है? इस प्रश्न का जवाब हाँ और नहीं में दिया जा सकता है। हाँ में तब जब वह कोई असाधारण बालक होगा। साधारण बालक को बोध प्राप्त होना असम्भव है।

मूलशंकर असाधारण बालक था। उसके समकालीन मुस्लिम विद्वान् ने आगे चलकर बालक मूलशंकर के द्वारा देखे गये चूहों को देखकर पिता जी से प्रश्न करना, वह भी पिता को अड़चन में डालने वाले प्रश्न कि यह कैसा शिव जो अपने पर रेंगते हुए चूहों से रक्षा नहीं कर सकता। यह सच्चा शिव नहीं यह कोई दूसरा शिव होगा। पिता ने उत्तर देना उचित न समझा होगा या उत्तर नहीं बनता होगा। बस सीधे कह दिया अपने निजी सिपाही से मूलशंकर को घर छोड़ आओ। और ऊपर से आदेश दिया कि घर जा रहे हो व्रत भंग न करना, नहीं तो पाप लगेगा आदि।

सर शैय्यद अहमद खाँ ने कहा है, कि वह दैवी प्रेरणा के अतिरक्त और कुछ नहीं था। जिस घटना ने दयानन्द को मूर्ति पूजा का अविश्वासी और पीछे जाकर मूर्ति पूजा का विरोधी कर दिया, जो दयानन्द को मूर्ति पूजा के उच्छेद के लिए जीवन व्यापी संग्राम में प्रवृत्त रखने का कारण हुई, वह ईश्वरीय घटना ही थी, इस में संदेह ही क्या है ?

बोध तो मूलशंकर को हुआ था। ऋषि को नहीं। ऋषि तो बाद में कहलाये। आखिर ऋषि शब्द का अर्थ क्या है? नालन्दा विशाल शब्द सागर के अनुसार ऋषि के लिए अर्थ दिया है – १. वेद - मंत्रों का प्रकाशक २. मंत्र दृष्टा। ३. आध्यात्मिक तथा भौतिक तत्वों का ज्ञाता। बृहत् हिन्दी कोश भी लगभग यही अर्थ देता है – मंत्र द्रष्टा, वेद मंत्रों का साक्षात्कार और प्रकाशन करने वाला व्यक्ति, बहुत बड़ा तपस्वी, मुनि आदि।

दयानन्द तो ऋषि तब बने जब वेदों का भाष्य किया ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका के प्रणयन करने के बाद। तब ऋषि कहलाये। जैसे वर्त्तमान युग में दयानन्द के बाद अरविन्द घोष। पर याद रहे न सायन ऋषि कहलाये और ना ही महीधर।

क्या दयानन्द को मालूम हुआ होगा कि उसे बोध प्राप्त हो गया था? उसने तो कहीं नहीं लिखा है। अपनी लघु आत्म कथा में भी नहीं।

आर्य जगत ने कब से उस रात्रि की याद में दयानन्द बोध या ऋषिबोध मनाना शुरू किया होगा? यह खोज का विषय है। इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना चाहिए।

पर उसमें परिवर्तन दिखाई देने लगा था। आज जब हम उसकी जीवनी पढ़ते हैं तो पढ़ने को मिलता है कि शिव मंदिर से घर वापस आने पर प्रतिमा पूजन से, धर्म के बाहरी आडम्बरों से विश्वास उठ गया था।

व्रत रखना, रात्रि जागरण करना, व्रत वा उपवास रखना या मीठा भोजन करना आदि कट्टर विरोधी हो गये थे।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

मातृ-भूमि की महत्ता

मॉरीशस हमारी मातृ-भूमि है। इसी रमणीय भूमि पर हमारा जन्म हुआ है। इसी ज़मीन पर हम अपने जीवन की उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त करते हैं। इसका जलवायु सेवन करके अपनी जीवन यात्रा पूरी करते हैं। एक माता जिस प्रकार अपने स्तन का दूध पिलाकर एवं सेवा शुश्रूसा करके अपनी संतानों को जीवन देती है, खून-पसीना बहाकर उन्हें सुख प्रदान करती है, उसी प्रकार हमारे देश की उपजाऊ ज़मीन सब कुछ सहन करती हुई सारे देशवासियों का पालन-पोषण करती है, इसीलिए हम अपने देश की भूमि को मातृ-भूमि कहते हैं।

हिन्द महासागर में मॉरीशस एक छोटा सा द्वीप है, परन्तु समस्त देशवासियों के प्रेमभाव तथा एकता एवं आपसी सहयोग से विश्व विख्यात है। यह प्यारा द्वीप अपने अद्‌भुत प्राकृतिक सौंदर्य और सर्वप्रिय जलवायु के कारण विश्व में प्रसिद्ध है। इस स्वर्ग सदृश भूमि की शोभा देखने के लिए बड़े-बड़े राजनेता तथा महा सम्पत्तिशाली पर्यटक यहाँ निरन्तर यात्रा करने आते हैं और सभी नागरिकों के प्रेम, सहयोग, परिश्रम एकता बल परख कर चकित हो जाते हैं।

हमारी धरती के गर्भ में हीरा, पन्ना, सोना-चाँदी, ताँबे, पीतल, लोहे जैसे बहुमूल्य पदार्थ तो नहीं पाए जाते हैं पर हम अपनी उपजाऊ ज़मीन में पसीना बहाकर धन कमाते हैं। औद्योगिक उत्पादनों द्वारा देश की आर्थिक-पूँजी बढ़ाते रहते हैं। अपने विद्या-बल, अनुभवों तथा नवीनतम तकनीकी साधनों के माध्यम से देश का उत्थान कर रहे हैं। जिन कारणों से हमारा देश हिन्द महासागर में एक हीरे की तरह चमक रहा है।

हमारे पूर्वजों के तप-त्याग और कठोर परिश्रम से आज यह देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होता जा रहा है। राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम, विष्णुदयाल बन्धुओं तथा अन्य राजनेताओं के अथक सहयोग से सन् १२ मार्च १९६८ ई० को हमारा देश ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतन्त्र हो पाया और हमारा राष्ट्रीय ध्वज ऊपर फ़हराया गया। अपने राष्ट्रीयध्वज का सम्मान बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। अपनी स्वतन्त्र मातृ-भूमि से अटूट प्यार स्थापित करना प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व है। अपने देश के हित में सोचने और उसके प्रति कर्म निभाना हमारा राष्ट्रीय-धर्म है।

मॉरीशस एक बहुसाम्प्रदायिक देश है। यहाँ ईसाई, इस्लाम, बौद्ध और हिन्दू आदि धर्मावलम्बी हैं, परन्तु सभी लोग बिना किसी भेदभाव से प्रेमपूर्वक मिलकर जीते हैं। अपनी मातृ-भूमि के उत्थान में पूरा सहयोग देते हैं । इसी कारण हमारा प्यारा देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होता जा रहा है और अपनी छवि विश्व में क़ायम कर रहा है।

मॉरीशस और भारत तो एक ऐतिहासिक संबन्ध है क्योंकि वह हमारे पूर्वजों की जन्म-भूमि है। हमारे धर्म, संस्कृति सभ्यता का स्रोत भारत है। इसी अटल सम्बन्ध के कारण वहाँ से हमारे देश में समय-समय पर संत, महात्मा, विद्वान् और राजनेता गण पधारते रहते हैं और हम भी अपने पूर्वजों की जन्म-भूमि के दर्शन करते रहते हैं।

हमारी सरकार और भारतीय सरकार के मध्य वर्षों से राजनीतिक क्षेत्र में एक गहरा सम्बन्ध स्थापित है। यह बड़े ही गौरव की बात है कि इस वर्ष के राष्ट्रीय समारोह की शान बढ़ाने के लिए मॉरीशसीय सरकार के आमन्त्रण पर भारत के प्रधान मन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी एक मुख्य अतिथि के रूप में पधार रहे हैं। हम देश-भक्ति की ऊँची भावना के साथ उस महान् राजनेता का भव्य स्वागत करने के लिए तैयार हैं। हम सभी नागरिक आगामी १२ मार्च २०१५ को बड़ी उत्सुकता पूर्वक अपने देश का २३ वाँ गणतन्त्र दिवस एवं ४७ वाँ स्वतन्त्रता दिवस मनाने जा रहे हैं । हमारी यही आशा है कि सभी देश-वासियों के सहयोग से वह समारोह सम्पन्न हो।

परमपिता की असीम कृपा से हमारा राष्ट्र उन्नतिशील होता रहे। दुर्भाग्य से कोई भी देश-द्रोही यहाँ पैदा न हो, किसी प्रकार का प्राकृतिक-प्रकोप इस स्वर्ग सदृश भूमि को क्षति न पहुँचाएँ । हमारा चौरंगा झंडा सदा ऊँचा रहे और हमारी मातृ-भूमि की महत्ता बढ़ती रहे। जय मॉरीशस।

बालचन्द तानाकूर

पृष्ठ १ का शेष भाग

वयोवृद्धि के साथ केवल खुद विरोधी नहीं रहे अपितु दूसरों को भी विरोधी बनाने लगे थे। किसी बात का विरोध करना और दूसरों को भी अपने साथ कर लेना। इसी सिद्धान्त पर चलकर १८७७ में २८ नियम-उपनियमों को लेकर जब आर्यसमाज के १० नियम निर्धारित किये तो लिखा 'वेदों को पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है। बोध प्राप्त हो गया पर दूसरों को भी बोध प्राप्त करवाना। नहीं तो केवल अपनी उन्नति होगी सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए यह भी एक नियम है। अगर अच्छी तरह से देखेंगे तो स्वतः प्रमाण मिलते जाएगा कि गुरु को दिया हुआ वचन पग पग पर चरितार्थ हो रहा था। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

हम देखते हैं, सुनते हैं और पढ़ते हैं कि केवल मंदिर का नज़ारा देखकर बोध नहीं हुआ। वह तो बोध की शुरुआत थी। १६ वर्ष की अवस्था में १४ वर्ष की बहिन की मृत्यु विसूचिका रोग से ग्रस्त हो कर हो गई। सभी लोग दुखी हुए केवल उसको छोड़कर मूलशंकर की आँखों से एक कतरा आँसू न गिरे। फिर कुछ ही समय बाद उसके प्रिय चाचा का एकाएक शरीरान्त हो गया। पिता के सख्त होने के कारण चाचा ही उसके बचाव का ढाल होता था। जीवन में यही दो लोगों को मरते देखा था। अब दुनिया से वितराग होने के दो कारण हो गए। एक सच्चे शिव की खोज और दूसरा मृत्यु से मुक्त होना अर्थात् दुनिया के आवागमन के चक्कर से छुटकारा पाना। इसके लिए भक्त को आराधक को संसार के मोह माया को संसार के पदार्थों को जीव से बाहर रखना अनिवार्य है। इसी लिए तो दयानन्द गृहस्थ जीवन के झमेले से दूर रहना चाहता था। उसे मालूम हो गया था, बोध हो गया था कि जीव के अन्दर संसार के पदार्थों की माया रहेगी तो ब्रह्म के दर्शन असम्भव है। मृत्यु पर विजय पाने के लिए योग-साधन ही मुख्य औजार है। इसलिए पितृ-गृह को त्यागना पड़ा। उसके लिए ऐशोआराम की ज़िन्दगी माता-पिता का प्यार, खासकर माता का स्नेह, बन्धु वान्धव का लगाव। सबको छोड़ दिया जैसे गौतम ने छोड़ दिया था।

हम पढ़ते हैं कि दयानन्द के लम्बे जीवन के सफ़र में विभिन्न प्रलोभन दिये जाते हैं। दयानन्द कहाँ फँसने वाला था। वह तो घर से निकला था सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए, मृत्यु क्या है उसकी जानकारी प्राप्त करने के लिए यही बोध का परिणाम था। फिर भी सन्तुष्टि न मिली अन्त में १५ वर्ष बाद ३६ वर्ष की उम्र में मथुरा में वृद्ध गुरु विरजानन्द की कुटिया का दरवाज़ा खटखटाया मानो स्रोत से निकलने के बाद लम्बी यात्रा करके नदी मिल जाती है सागर में। दयानन्द को जैसे सच्चे गुरु की खोज थी उसी तरह विरजानन्द को दयानन्द जैसे शिष्य की तलाश थी। एक दूसरे को मिल गया मन-पसन्द गुरु और शिष्य । पर लगभग तीन वर्ष बाद दयानन्द का जीवन की यात्रा का तीसरा पड़ाव शुरू होता है ।

मानव जीवन की सार्थकता एवं महर्षि दयानन्द

डॉ० श्रीमती ऋचा शर्मा माकूनलाल, एम.ए.,पी.एच.डी (संस्कृत), अध्यापिका डी.ए.वी.कॉलेज

महर्षि दयानन्द को बोध कितने त्याग और तपस्या के बाद प्राप्त हुआ यह हम भली-भाँति जानते हैं। बोध प्राप्ति के बाद महर्षि ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव उद्धार और समाज सुधार में लगा दिया।

महर्षि दयानन्द ने हमारे लिए इतना कुछ किया, क्या आज हम जानते हैं कि वे हमसे क्या चाहते थे, या उनका उद्देश्य क्या था? आइये एक छोटी सी कहानी से समझने का प्रयत्न करते हैं-

'एक व्यापारी था, उसके तीन पुत्र थे, व्यापारी पिता वृद्ध हो चला था अतः अपने व्यापार को आगे बढ़ाने के लिए अपने तीनों पुत्रों में से किसी एक का चयन करना चाहता था। उसने एक दिन अपने तीनों पुत्रों को बुलाया और अपने मन की बात बताते हुए कहा, मैं सही चयन के लिए तीनों को सौ-सौ रुपये और एक-एक कमरा देता हूँ, जो सौ रूपये में कमरा अच्छे से भर देगा उसी को मैं अपना व्यापार सौंप दूँगा।

पिता से रुपये लेकर तीनों पुत्र बाजार में निकल पड़े, पहले पुत्र ने सोचा पिता पागल है, इसलिए ऐसा असम्भव कार्य दिया है किन्तु कमरा भरना तो है ही। उसने बहुत सोचने पर कचरे की एक लौरी जो शहर से बाहर कचरा डालने जा रही थी उसे बुलाया और सौ रुपये देकर सारा कचरा कमरे में डलवा दिया, कमरा भर गया वह प्रसन्न हुआ, उसने उसे बन्द कर दिया और पिता जी की प्रतीक्षा करने लगा।

दूसरे पुत्र ने सोचा सौ रुपये में तो कमरा भरा नहीं जा सकता तो कुछ जुआँ खेलता हूँ, सौ के दो सौ, दो के चार सौ इस तरह जब अधिक रुपया हो जायेगा तब सोचूँगा कि कमरा कैसे भरा जाय। और वह जुआँ खेलने बैठ गया और खेलते-खेलते वह पिता के दिये सौ रुपये को भी हार गया, और फिर सर पकड़कर बैठ गया।

तीसरे सबसे छोटे बेटे ने सोचा, पिता ने कहा है तो सौ रुपये में कमरा अवश्य भरा जा सकता है, जल्दी ही उसे समझ आ गया और उसने सौ रुपये से दीपक खरीदकर कमरे को प्रकाश से भर दिया। जब पिता ने तीनों को बारी-बारी देखा तो उसे प्रसन्नता हुई और सबसे छोटे का चयन करके अपना व्यापार उसको सौंप दिया।

कहानी समझने के लिए होती है यहाँ व्यापारी अथार्त् पिता है ईश्वर और उसने हमें सौ वर्ष की आयु देकर हमें जीवन रुपी कमरा भरने के लिया दिया, और कहा योग्य बनो, पात्र बनो। लेकिन हमें से कुछ पहले पुत्र की तरह अपने जीवन को कचरे से अथार्त् द्वेष, अहंकार, क्रोध आदि से भर चुके हैं, इसलिए हम योग्य नहीं। दूसरे कुछ अधिक धन एकत्र करने के लालच में जीवन को जुए की तरह खेलकर बर्बाद कर रहे हैं, अतः वह भी योग्य नहीं है।

हममें से कितने हैं जो तीसरे बेटे की तरह अपने इस जीवन को अथार्त् ज्ञान से भर पा रहे हैं, हम हमेशा शिकायत करते हैं भगवान हम पर कृपा नहीं करता, किन्तु पहले हम उसके पात्र बनें, योग्य बनें, उसका अमृत जल, हमें उसकी कृपा अवश्य प्राप्त होगी। महर्षि दयानन्द का प्रयत्न यही था कि हम सही रुप में मनुष्य बनें अपने जीवन को सही दिशा में ले जाते हुए सत्य के मार्ग को अपनाते हुए ही अपनी और सबकी उन्नती करें।

हमें अपने अन्तःकरण को ज्ञान के आलोक से भरना चाहिए, तभी हम महर्षि के बताये मार्ग पर चलने में समर्थ हो सकते हैं।

ARYA SABHA MAURITIUS

Triennial Election of eighteen (18) members to sit on the Managing Committee of Arya Sabha Mauritius for the period 2015 - 2018

Notice is hereby given to **all compliant members** of Arya Sabha Mauritius that the triennial election of eighteen (18) members to sit on the Managing Committee of Arya Sabha Mauritius for the period 2015-2018 will be conducted by the **Office of the Electoral Commissioner** on Sunday the twenty-ninth (29th) day of March, 2015; and that the Returning Officer will receive notices of candidature for the said election on **Saturday the seventh (7th) day of March, 2015** between the hours of **9 a.m. and 12 noon** at the Registered Office of Arya Sabha Mauritius at Arya Bhawan, 1, Maharishi Dayanand Street, Port Louis.

Each candidate will be allotted a symbol of identification and will be invited to make his choice from an official list of symbols obtainable from the Returning Officer or to submit a **line drawing** of the symbol of his choice in black colour on a white background, acceptable to the Electoral Commissioner. The size of the drawing should occupy a space within the range of 25 x 25 mm and 50 x 50 mm.

Candidates wishing to constitute a **group** and hence to be allotted the same symbol of identification are requested to sign a **"collective letter"** to that effect and to produce it to the Returning Officer when tendering their notices of candidature on 07 March, 2015. They should also designate one of them to act as "leader of the group".

Forms of notice of candidature as well as "collective letters" may be obtained either at the Registered Office of Arya Sabha Mauritius at the abovementioned address or at the Office of the Electoral Commissioner, MaxCity Building, Cr. Remy Ollier and Louis Pasteur Streets, Port Louis during normal office hours.

Every notice of candidature shall be accompanied by the National Identity Card of the candidate or one of the following proofs of identity, namely passport, driving licence or bus pass; and be submitted to the Returning Officer at the Registered Office of Arya Sabha Mauritius between the said hours of 9 a.m. and 12 noon on 07 March, 2015.

Where a notice of candidature is submitted by a person acting on behalf of a candidate, it shall be accompanied by the National Identity Card of that person **and** that of the candidate, **or** one of the following proofs of identity, namely passports, driving licences or bus passes of both persons.

Every notice of candidature shall specify the full names, address and National Identity Card number of the candidate and shall contain a declaration by the candidate that he is qualified to be elected as a member of the Managing Committee of Arya Sabha Mauritius.

Notices of candidature received by post, fax, email or otherwise will not be considered.

M.I. ABDOOL RAHMAN
Electoral Commissioner

13 February, 2015

सामाजिक गतिविधि

एस. प्रीतम

दयानन्द दशमी

पिछले कुछ वर्षों से फाल्गुण मास याने फरवरी को दयानन्द मास नाम से अभिहित करते आ रहे हैं । इसी मास में फाल्गुन दशमी को दयानन्द जयन्ती है और इसी मास की त्रयोदशी को महाशिवरात्रि पड़ी।

हम आर्य समाजियों ने आर्य समाज के संस्थापक महा ऋषिदयानन्द की दशमी इस लिए शुक्रवार को ब्वाशेरी सरकारी पाठशाला में मनायी क्योंकि पिछले बीस वर्षों से अधिक समय से वहीं मनाते आ रहे हैं। हमारी माँग पर पूर्व प्रधान मंत्री सर अनिरुद्ध जगनाथ सरकार ने उक्त स्कूल का नाम महर्षि के नाम पर दिया था। तब ही से हम स्कूली बच्चों के बीत दयानन्द का जन्म दिन मनाते हैं।

गत शुक्रवार १३ फरवरी को समारोह पूर्वक जन्म दिन मनाया गया कार्यक्रम यज्ञ से शुरू हुआ आचार्य उमा जी के प्रधानत्व में और स्थानीय पुरोहित नन्देव कल्का और श्रीमती बिसेसर की सहायता से, और यजमान ब्वाशेरी आर्य समाज के सदस्यगण बने थे।

स्थायी समाज एवं उसी स्कूल के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किये ।

इलाक़े के दोनों सांसद माननीय मानीश गोबिन और बशीर जहाँगीर के साथ मेनोन मार्दे उपस्थित थे। आर्य सभा का प्रतिनिधित्व करते हुए उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम, और सावान आर्य ज़िला परिषद् के श्री श्री बिसुन बुलाकी और राजेन राम जी क्रम से प्रधान और मंत्री उपस्थित थे।

कार्य का संचालन बखूबी आरम्भ से अन्त तक भाई रामसहाई ने सम्भाला। उन्होंने बीच-बीच में आर्य सभा और ब्वा शेरी आर्य समाज के सहयोग व सहायता की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

शेष सभी वक्ताओं ने खास कर शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द को स्मरण किया और कहा कि कभी भी स्वामी जी के द्वारा समाज के उत्थान में किये गये उपकार को भुलाया नहीं जा सकता ।

स्कूल के मुख्य अध्यापक जनाब जिनताली, पी.टी.ए. प्रधान चंदन रामसहाय और स्थानीय आर्य समाज के प्रधान श्रवणकुमार खुदीराम और मंत्री श्री संजय बेचू ने पाठशाला की छठी जमात के बच्चों द्वारा किये गये अच्छे प्रयास की प्रशंसा की और कहा कि उन्हें खुशी है कि गत साल सी.पी.ई का परिणाम ८८% रहा।

सावान ज़िला परिषद् (District Council) के तरुण अध्यक्ष श्री राजीव लक्ष्मण ने १५,००० रुपये दान में ब्वाशेरी आर्य समाज को दिये। जलपान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

OM
The President & Members
of
Paillotte Mon Desir Arya Samaj & Arya Mahila Samaj
have the pleasure to invite you along with your family, friends and samaj members to attend the
Anniversary Celebration of the Hindi School
Venue : Paillotte Mon Desir Arya Samaj Mandir.
Date : Saturday 14th March 2015
Time : 2.00 p.m. to 4.00 p.m.
Various eminent personalities will grace the function by their presence.
Organising Committee

The Target of National Vegetarian Association
राष्ट्रीय शाकाहारी संगठन का लक्ष्य

पंडिता राजवंश सोलिक

"वसुधैव कुटुम्बकम" सारा संसार एक परिवार है, यह संदेश वेदों का है। जब सारा संसार एक परिवार है और सबका पिता एक परम पिता परमात्मा है, तो फिर सबका खान-पान और रहन-सहन अलग-अलग क्यों? परमात्मा की दृष्टि में उनकी सभी सन्तानों बराबर हैं, सभी का लालन-पालन वह एक जैसा करता है। कुछ बच्चे पिता की आज्ञा का पालन करते हैं, कुछ मनमाने ढंग से जीवन यापन करते हैं। ऐसी अज्ञानी सन्तानों के लिए परमात्मा दूसरी आज्ञाकारी सन्तानों को आदेश देता है कि वे उनका मार्गदर्शक बनकर सही राह पर चलने के लिए उनकी सहायता करें।

N.V.A. अर्थात् राष्ट्रीय शाकाहारी संगठन का यह लक्ष्य है कि वह अज्ञानता में पड़े हुए अपने भाई-बंधुओं का मार्ग-दर्शक बने, अज्ञानतावश् कर रहे पाप कर्मो से उनको बचावें और अपने मनुष्य अर्थात् मननशील होने का गौरव प्राप्त करें। परमात्मा ने इतना सुन्दर सजाधजा शरीर और विचार करने के लिए बुद्धि दी है फिर भी अज्ञानतावश् इसका दुरुपयोग हो रहा है। दिन प्रतिदिन निर्दोष और लाचार पशुओं की हत्या एक फैशन बन गयी है। जगह-जगह पर खुल्ले-आम पशुओं का मांस बेचना और हमारे लोगों का उसका भक्षण करना, ऐसा लगता है कि मनुष्य क्रूर और निर्मोही बनता जा रहा है। जाने कौन सी अशुभ घड़ी थी जब मनुष्य के मस्तिक में ऐसा दुष्ट विचार ने जन्म लिया होगा कि वह मांस का भक्षण करे। पता नहीं किस परिस्थिति और लाचारी में हमारे अपनों ने इस परम्परा को शुरू किया होगा और धरोहर के रूप में अपनी सन्तानों की झोली में ऐसा कुसंस्कार डाल दिया जो जड़ पकड़ता जा रहा है। आज अपनों को झस पाप के दलदल से निकालने के लिए परमात्मा हमें शक्ति दे जिससे हम उनको सही राह दिखा सकें।

वेदानुसार संसार के सभी प्राणी परमात्मा की सन्तानों हैं, फिर परमात्मा अपनी ही सन्तानों को दूसरी निरपराध सन्तानों का भक्षण करने का अधिकार कैसे दे सकता है? सभी प्राणी अपने कर्मानुसार जन्म लेकर इस संसार में फल प्राप्त करते हैं। मनुष्य परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसको परमात्मा ने सुन्दर शरीर और बुध्दि के साथ-साथ अपना अमूल्य खज़ाना 'वेद' दिया है, जिससे वो ज्ञानपूर्वक इस संसार में कर्म करे और परोपकारी बनकर दूसरे जीवों का उपकार करे परन्तु मनुष्य अपनी बुध्दि का दुरूपयोग कर दूसरों का अपकार कर रहा है।

संसार के जितने भी प्राणी हैं, मनुष्य से लेकर पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि सभी का अपना उद्देश्य है जिसको निभाने के लिए वे इस संसार में आते हैं, पशु-पक्षी आदि भोग-योनि में और मनुष्य कर्म योनि में। यदि कोई हिंसक पशु है जो दूसरों को हानि पहुँचाता है तो उससे अपनी रक्षा करना उचित है और अगर उसके लिए उसको मारना भी पड़े तो इस में कोई हानि नहीं परन्तु उसका भक्षण करना महा पाप है। यह तो हिंसक पशुओं की प्रवृत्ति है, उपकारी और निरपराध पशुओं को मारकर खाना तो महा पाप है। गाय, बैल, हाथी, घोडे, ऊँट, भेड़, गधे, बकरी आदि, ये सब बहुत ही उपकारी जीव हैं। मनुष्य के जीवन में इनका बड़ा महत्व है। प्राचीन काल मे विज्ञान ने इतनी प्रगति नहीं की थी तब मनुष्य इन्हीं के सहारे अपना काम चलाते थे और आज भी ये पशु उतने ही उपकारी हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश के दसवें समुल्लास में भक्ष्य-अभक्ष्य के विषय में चर्चा की है। उन्होंने बताया है कि गाय एक इतने उपकारी जीव है कि उसकी एक पीढ़ी से (४७५६००) चार लाख पचहत्तर हज़ार छः सौ मनुष्य का पालन होता है अर्थात् इतने मनुष्यों को लाभ और सुख पहुँचता है। बकरी के एक पीढ़ी से (२५९२०) पच्चीस हज़ार नौ सौ मनुष्यों का पालन होता है।

ऐसे पशुओं की हत्या करने वाले इनके साथ अन्य करोड़ो मनुष्यों की हत्या का कारण बनते हैं क्योंकि पशुओं से दूध, घी, अन्नादि की वृध्दि होती है और सैकड़ों मानव प्रामियों को उनसे जीवन मिलता है। जितना समय स्थान भक्षण हेतु जानवरों को पालने में लगता है। इसलिए खर्च और स्वास्थ की दृष्टि से भी साग-सब्जी अन्न और फलों को खाने में अधिक लाभ है, यह तो एक कारण है। दूसरा कारण परमात्मा ने मनुष्य का शरीर इस प्रकार से बनाया है कि वह अन्न, साध-सब्ज़ी और पल को आसानी से पचा सके। उसकी आतें मास आदि पचाने के लिए नहीं बनी हैं। मांसाहारी भोजन को पचाने में बहुत समय और अधिक ऊर्जा खर्च करनी पडंती है। अधिक ऊर्जा व्यर्थ खर्च करने से (CALCIUM) की कमी हे जाती है जिससे शरीर कमज़ोर और रोगग्रस्त हो जाता है।

जो मनुष्य वेदानुसार अपने जीवन व्यतीत करते हैं वे इन दोषों से दूर रहते हैं। जो वेदज्ञान से अनभिज्ञ है वे मांसाहारी होने पर गौरव अनुभव करते हैं और न खाने वालों को मूर्ख समझते हैं। ऐसे लोग हमारे अपने ही हैं जिन्हें सही राह दिखाने में परमात्मा हमारी सहायता करे, ऐसी प्रार्थना है। इस कठिन कार्य को कार्यान्वयन के लिए तीन वर्ष पूर्व परमात्मा का प्रतिनिधि बनकर हमारे देश में भारत से आचार्य आशीष जी आए जिन्होंने N.V.A अर्थात् राष्ट्रीय शाकाहारी संगठन की नींव रखी। उन्होंने तो मांसाहारी होने की हानियों और बुराइयों से सचेत किया और शाकाहारी बनने को प्रोत्साहित किया। इस महान कार्य में बहुत लोगों ने सहयोग दिया और N.V.A के सदस्य बने। कितने लोग मांसाहारी से शाकाहारी बन गए और दूसरे लोगों को इस संगठन की सदस्यता प्राप्त करने का व्रत लिया। धीरे-धीरे यह संगठन फलने-फूलने लगा है। बहुत से लोग इससे जुड़ने लगे हैं। यह संगठन किसी विशेष जाति के लिए नहीं है बल्कि सभी लोगों के लिए है, इसमें हम सभी का स्वागत करते हैं और एक स्वस्थ और शाकाहारी समाज के निर्माण के लिए परमात्मा से शक्ति की प्रार्थना करते हैं।

Om ! Agné naya supathā rāyé asmān vishwāni déva vayunani vidwān.
Yuyodhya-smaj-juhurāna méno bhuyishthām té nama uktim vidhéma.

Yajur Veda 40/16
& Ishopanishad

cont. from pg 1

Interprétation / Anushilan

(i) Introduction

C'est le 16ème Verset du 40ème chapitre du Yajur Veda. Ce Chapitre constitue un de onze Upanishads authentiques de la Religion Védique et est appelé 'Ishopanishad'.

Il faut que l'on sache aussi que les Upanishads et surtout -- 'Ishopanishad' ou 'Bhagavadgita' ne sont pas entièrement consacrés à la spiritualité, mais ils nous enseignent comment vivre décemment et correctement, c'est-à-dire, ils nous indiquent le savoir-vivre, les codes d'éthiques, et les valeurs humaines.

Il est tout à fait évident qu'une personne, qui n'a aucune notion du savoir-vivre et de la psychologie, ne réussira jamais dans la vie.

Ces livres (les Upanishads et le Bhagavadgita) sont très utiles à toute l'humanité. Ils sont comme des conventions qui traitent entièrement de la psychologie humaine et des remèdes contre les problèmes émotionnels pour nous aider à relever tous les défis de la vie avec succès.

(ii) Voici en bref l'interprétation de ce verset du Yajur Veda.

O Seigneur Tout Puissant, Omniscient, Resplendissent, Le Créateur, Le Maître Suprême de l'univers, le détenteur de toute la richesse intellectuelle, spirituelle et matérielle, et notre Guide par excellence, indique nous la bonne voie qui nous mène vers le bonheur, la prospérité et la spiritualité ! Accorde-nous le courage moral, l'état-d'esprit et la force pour combattre le mal, et éloigne de nous tous nos mauvais penchants, nos vices et nos péchés de sorte que par ta grâce, nous puissions atteindre le bonheur suprême, voire la félicité éternelle (Moksha) dans cette vie, et nous vous en serions toujours reconnaissant.

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती

कवि हरिवंशराय बच्चन

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है,
मनका विश्वास रंगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है,
मेहनत उसकी बेकार हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
डुबकियाँ सिन्धु में गोताखोर लगाता है,
जा-जाकर खाली हाथ लौटकर आता है,
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना विश्वास इसी हैरानी में,
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों को कभी हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमी रह गयी देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल हो नींद चैन की त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम,
कुछ किए बिनाही जय-जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

प्रेषित - सत्यदेव प्रीतम द्वारा

जीवन में समझ का महत्व

डॉ विनय सितिजोरी

हमारे जीवन में अवश्य दृढ़ता होनी चाहिए परन्तु इसके लिए जिद्द नहीं, जिद्दी व्यक्ति कुछ पाता नहीं बल्कि पाया हुआ भी खोने का भय रहता है। जीवन में अवश्य बहादूरी हो, मगर जल्दवाज़ी नहीं। हर प्राणी पर हमारा दया का भाव हो किन्तु यह कमज़ोरी नहीं। हमेशा तुम में पूर्ण मौन हो, दंभ व अभिमान न हो। चतुराई अच्छा गुण है परन्तु चतुराई से दगाबाजी व धोखेवाजी न हो। धीरज अवश्य हो, सफलता पाने के लिए, पर बेपरवाही नहीं। अहमियत हो, अभिमान व घमण्ड नहीं। जिन्दगी में अवश्य मिठास हो, जीवन की सफलता में मधुरता हो, खुशामद नहीं। इंसाफ़ हो, बदले की भावना न हो, यही जीवन की समझ है और इसी समझदारी में जीवन निहित है।

जैसा चिन्तन-वैसा चरित्र बनता है। चरित्र ही जीवन है। अतः जीवन को सदा चरित्रवान बनाकर रखो क्योंकि जीवन चलायमान, विचारवान है, अच्छा आहार से अच्छे विचार, अच्छे विचार से अच्छा व्यवहार, अच्छे व्यवहार से अच्छे संस्कार और अच्छा संस्कार से अच्छा संसार बनता है और यही समझ, समझ का संसार है। अतः समझ से विचारों में जोश, शक्ति शौर्य साहस व स्वाभिमान बना रहता है।

The President & Members
Mahebourg Arya Samaj
under the aegis of Arya Sabha Mauritius
in collaboration with
Grand Port Arya Zila Parisahd
Holi Mahotsav & 47th Anniverssary of Independence Day Celebration
Venue : Mahebourg Arya Samaj Mandir
Date : Sunday 8th March 2015
Time : 8.00 - 1030 a.m.
Your presence will be highly appreciated.

D. Gangoo	R. Seerkissoon	S. Sayjadah
President	*Secretary*	*Treasurer*

O M
The President & Members
ARYA SABHA MAURTIUS
request the pleasure of your company to attend the celebrations of the
47th Independence Anniversary
&
23rd Anniversary of the Accession of Mauritius to the Status of Republic

Day & Date : Saturday 7th March 2015.
Time : 2.00 p.m.
Venue : Arya Bhawan, Mohunlall Mohith Hall,1, Maharshi Dayanand Street, Port Louis.
Chief Guest : Hon. Jayeshwur Raj Dayal, CSK, PDSM, QPM, Minister of Environment, National Emergency Centre and Beach Authority.
Special Guest : Hon. Prithvirajsingh Roopun, Minister of Social Integration and Economic Empowerment

Various other eminent personalities will grace the function by their presence.
We hope to be honoured by your distinguished presence.

Balchan Tanakoor	Harrydev Ramdhony	Bholanath Jeewuth
President	*Secretary*	*Treasurer*

The highly crafted personality of cultured people

Ātmānam rathinam viddhi shariram rathameva tu |
Buddhim tu sārathim viddhi manah pragrahameva cha ||
Indriyāni hayānāhurvishayānsteshu gocharān |
Ātmendriyamanoyuktam bhoktetyāhurmanishinah ||

[Kathopnishad 1/3/3-4]

These hymns refer to the Soul *(ātmā)* as the owner of the coach *(ratha)*; the body *(sharira)* as the coach; the intellect *(buddhi)* as the coachman *(sārathi)*; the mind *(mana)* as the reins; the senses *(indriya)* as the horses in a cart; the path of the senses is indulging in taste *(rasa)*, smell *(gandha)*, sight *(roopa)*, sound *(shabda)* and touch *(sparsha)*. When the soul muddles up with the mind and the sense organs, its only focus is take pleasure in physical gratification. As such the soul is referred as *bhoktā*, i.e. an end user who consumes only for the sake of consumption, i.e. delighting the sense organs.

Bhogā na bhuktā vayameva bhukā,
tapo na taptam vayameva tapta |
Kālo na yāto vayameva yātā,
trishnā na jirnā vayameva jirnā ||
[Shloka 22, Bhartrihari's Vairagyashatak]

This verse reminds us of the undeniable fact that indulgence has no limit and we shall never satisfy our cravings. Progress is nowadays measured by consumerism (consuming only for the sake of consumption) which is equals to adding fuel to the fire extinguishing of our obsessions. We shall gain control of the situation only by chalking our behaviour to attain the real goal of human life. Otherwise we shall be reduced to dust in the mill of *ādhyātmik*, *ādhidaivik* and *ādhibhautik* distress. Man lives to regret time-pass and realises the folly only when time passes him out, he is then old and about to die.

Sutra 5/1 of the Sankhya Darshan reads: *"Māngalācharan shishtachārāt phaldarshanāt shrutitascheti ||"* The author, Maharishi Kapil describes *Māngala ācharan* as an upright conduct. We are able to see people reaping the fruits of their actions: those living up to the ideals of *Yama-Niyama*, etc. have a high sense of fulfilment and remain content throughout whereas those with insatiable cravings are never satisfied and mostly unhappy. *Māngalācharan* in this aphorism also refers to *ātmavat vyvahāra*, i.e. being mindful not only to human beings but also to other species of living organisms.

Shishtachār or *Shishton kā āchāran* refers to the behaviour of cultured people, amongst others being even-tempered and whose thoughts, speech and actions are in perfect harmony. ***Shishta*** **people are those with a highly crafted personality; they walk-the-talk, i.e. they practice what they preach.** They nurture *ahimsā* (non violence) at the level of the mind, tongue and body and promote *vidyā* (true knowledge). They are the fierce critics of *avidyā* (ignorance, incomplete, contrary or false knowledge). They steer clear of dodgy behaviours such as infatuation, anger, jealousy, deceit and delusion. They possess the drive not to fall into the endless tunnel of *lokeishna* (fame), *putreishna* (the nauseating attitude of rewarding relatives and friends outside the scope of meritocracy) and *vitteishna* (chasing monetary gains further than what is ethically required).

The Yog Darshan elaborates on the benefits of *Shishta ācharan* or the basic philosophy of a civilised life which simultaneously requires the mind, the tongue and the body to abide to the five fundamentals of *yama* (social-discipline).

(1) *Ahimsā* : Non-violence is wrongly perceived as a weakness. In fact, he who abandons violence ceases to be aggressive and those around him also tend to emulate him; hostility ceases both ways.

(2) *Satya* : Unbendable in truth, our actions will always yield positive results in the same way as oil cannot remain under water for long and finds its way to float on water.

(3) *Asteya* : Non stealing opens the avenues to acquire valuable things as people appreciate integrity in all dealings.

(4) *Brahmcharya* : Self-restraint has been... is... and will always be "the most effective and efficient solution" to abstain from sensual deviations. It results in both physical and mental vigour as well as clarity of mind on mundane and spiritual matters. [Note: *The World Health Organisation (WHO) advocates 'Abstinence'* (Brahmcharya), *'Be faithful'* (pativratā & patnivratā) and *Condom as the 1st, 2nd, and 3rd remedy in the ABC's of the fight against HIV/AIDS.]* Maharishi Dayanand has included the study of the Vedas and allied literature *(Arsha granthas)* under the scope of *Brahmcharya* as it is also a phase of life where we are busy in studies.

(5) *Aparigraha*: Renouncing the accumulation of superfluous/unnecessary thoughts and wealth) may spot us as the odd-man-out. However, it frees us from the vociferous materialism which drowns man into reckless-spending, wastefulness and fighting to gain control of the limited resources available in the world. **The almighty has created the world with sufficient resources to satisfy the needs of all living beings NOT the greed of a handful among mankind.** Detachment from overt-possessiveness empowers man to discern between what is right and what is wrong for him as well as the whole universe. He realises that he is has to leave a positive legacy to the coming generations.

Yama is one rail of the track leading to a highly crafted personality. The other is *niyama* or the five fundamentals of self discipline.

(1) *Shaucha:* Bath and other body cleansing activities yield a general feeling of well-being. A clean environment favours outer social hygiene. Another important facet of personal and social hygiene is the purity of mind and thoughts *(satwa shuddhi sumanasya)* which would relieve society from most of the prevailing evils. At personal level we would improve our ability to stay focused (*ekagratā*), physical fitness and control of the senses (*indriyajayatwa*) and thereafter attain self-realisation (*ātmadarshan*).

(2) *Santosha*: Contentment is the very best in happiness ever obtained. Sages have qualified the level of happiness as being equal for (1) an ascetic living with two sets of clothes, simple food and a place to pursue his spiritual progress and (2) a person engrossed in mundane matters who leads a 'sophisticated modern life' and lavishness is the norm. Yet, the ascetic has an edge in his level of happiness as he is not crowding out the resources which may serve needy people.

(3) *Tapa* is the skill to be level-headed, more specially in front of adverse situations. Austerity results in the elimination of impurity and the perfection of the body and sense organs, thus a healthier life.

(4) *Swādhyāya* : The study of the Vedas and ancillary literature developed by Vedic sages gives us a better understanding of mundane and spiritual matters. God (*Parmātmā*) becomes our cherished divine being (*Ishta Deva*). Our endless efforts (*purushārtha*) coupled with pure and truthful living yield multiplier effects where the Almighty blesses us with more knowledge and we progress onwards to attain salvation.

(5) *Ishwarpranidhāna :* The awareness that GOD is Omnipresent, Omniscient, etc. and continually observing, listening and taking notice of where we are engaging our mind, speech and body, renders us humble in our submission for total obedience to His commands. We shall be able to meditate with ease and reach *Samādhi* (Self-realisation and more importantly God-realisation.)

These behavioural limitations are related to the eight-fold process '*ashtānga*' yoga, a great commitment to uplift the physical, moral and spiritual standards of the self, the ripples of self-improvement will ultimately yield a better home... society... village... town... country... and ultimately a better world.

Doubts produce violence and related actions, which are performed (*krita*), caused to be done (*kārita*) or endorsed (*anumodita*), and which are caused by greed (*lobha*), anger (*krodha*) and delusion (*moha*), even if minor, average or substantial. These cause undue and endless distress as well as spiritual ignorance. Under such circumstances one should engage the mind to consider the opposite features (*pratipaksha bhāvanam*) before gearing into action.

A cultured person with such highly crafted personality is ethical round the clock (24 x 7, i.e. 24 hours & 7 days a week). He leaves no margin for any adjustment because of status, location, time and condition as the Omnipresent, Omniscient God is continuously observing, listening and taking notice his thoughts, speech and actions.

Let us also prayer that God grants us the courage to look into the mirror, gauge our outlook on the above principles, take remedial measures to craft our personality and be real *Aryas* (noble in thoughts, speech and actions).

BramhaDeva Mukundlall
Darshan Yog MahāVidyālaya
Rojad, Gujarat, India

Bibliography : (1) *Satyārtha Prakāsh, RigVedādi Bhāshya Bhumika, 10 principles of the Arya Samāj by Maharishi Dayanand Saraswati; (2) Yog Darshan by Maharishi Patanjali; (3) Sānkhya Darshan by Maharishi Kapil; (4) Upanishads; (5) Vivek Vairāgya Sangraha by Darshan Yog MahāVidyālaya*

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

D.A.V College (Port Louis) – In Action January – February 2015

Start of the new Academic Year 2015

The D.A.V College has started its new Academic Year 2015 on 9th January with an admission day held to admit the new intakes of students in Form I and prevocational classes. The number of new intakes totals to 120 students approximately. However, late admissions are still taking place and it is expected that the final intake might reach up to 150 students by end of February. There was a delay in the normal start of the academic activities due to cyclonic weather conditions which resulted in Monday 12th, Tuesday 13th and Wednesday 14th being declared holiday at national level. The College took up with its normal activities on Thursday 15th January.

50th Anniversary of the D.A.V College

The year 2015 will be marked as a very special year for the College as it will celebrate its 50th anniversary. A couple of activities have been planned to celebrate this occasion including the launching of a College Magazine. All teaching, non-teaching staff and students have been invited to support the organisation of this Anniversary so as to make it a remarkable success.

D.A.V Port Louis, SC results 2014: ON THE RISE – 75%

D.A.V College Port Louis has recorded a very good set of 2014 SC results. The overall percentage pass is 75%. A perfect score of 100% has been achieved by a majority of departments, namely: Arts & Design, Chemistry, Design & Communication, Fashion & Fabrics, Food & Nutrition, Hindi, Hindi Lit, Hinduism and Physics. Moreover, the English and French departments have come up with remarkable outcomes of the SC results: English: 97% with 17 credits; French: 94% with 28 credits, including 7 distinctions. Of the 3 students who sat for Hindi Literature, 2 got distinctions 'ONE' and the third distinction 'TWO'.

It is a true reflection of the hard work and the dedication of both our staff and students and also the strong support we are given by the top management.

HSC Results - An even more remarkable success 88.3%

While the College was already on a thrilling mood with the outstanding SC results, it got to cherish added joy with the declaration of the HSC results which showed up with a percentage pass of 88.3%. Such a success among the HSC results has been experienced for the first time in the history of D.A.V College. We are the second best among the private colleges situated in zone 1 and we have been ranked 25th position among 209 colleges that participated in the HSC Exams in year 2014.

Star colleges always come up with very good passing rates and some even with Laureates. But this does not leave any surprising feeling as those students are already elites. However, when a College packed with slow learners brings up such amazing results, its gives a sense of extreme happiness and positive pride. It is the kind of feeling that the College has experienced this year.

Indeed, it is the hard work of our teaching staff and the management that has made such an achievement possible. We want to keep that same working spirit at D.A.V College and we want to ensure that the college comes up with even more excellent results in coming years.